धन तेरस - एक लघु कथा

कथाकार

डॉ यतेंद्र शर्मा

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ

ऑस्ट्रेलिआ – ६०२५

धन तेरस

आज महा धन तेरस दिवस है । यह दिवस तो पत्नी के त्याग, प्रेम और बलिदान का प्रतीक है । इसी दिवस तो महाराजा हेम जी की पुत्र-वधु ने अपनी प्रेम, निष्ठा और श्रद्धा से देव यम को प्रसन्न कर उनसे पति को जीवन दान देने पर विवश कर दिया था । यह दिवस तो अवश्य ही समस्त पतियों के लिए अपनी पत्नियों के प्रति कृतज्ञता दिखाने का दिवस है।

मुझे आज पितामह के द्वारा सुनायी हुई एक पौराणिक कथा कुछ कुछ याद आ रही है। द्वापर युग में चक्रवर्ती सम्राट हेम विक्रमादित्य की धर्मपत्नी साम्राज्ञी ने जब एक पुत्र को जन्म दिया तो राज ज्योतिषियों ने नक्षत्र गणना करके बताया कि यह बालक जब भी विवाह करेगा, उसके चार दिन बाद ही मर जाएगा । यह जानकर सम्राट हेम ने राजकुमार को स्त्रियों की छाया तक से बचाने हेतु अपने गुरु के पास यमुना तट की एक गुफा में ब्रह्मचारी के रूप में जीवन यापन करने भेज दिया। लेकिन होनी को कौन टाल सकता है? संयोग से एक दिन जब पड़ोसी सम्राट हंस की युवा राजकुमारी यमुना तट पर अपनी सहेलियों के साथ भ्रमण कर रहीं थीं, तो उस युवा ब्रह्मचारी राजकुमार युवक पर मोहित हो गयीं। दोनों ने गंधर्व विवाह कर लिया। ज्योतिषाचार्य जी की भविष्य वाणी के अनुसार चौथा दिन पूरा होते ही राजकुमार मृत्यु को प्राप्त हुए। अपने पति की मृत्यु देखकर युवा राजकुमारी बिलख बिलख कर रोने लगी । उन नवविवाहिता राजकुमारी का करूण विलाप सुन स्वयं यमदूत भी अपने आंसू नहीं रोक पाए । लेकिन यमदूत तो ठहरे न्याय के पालन-कारक । यमदूत ने कहा, पुत्री मैं विवश हूँ । विधि के विधानुसार उनकी मर्यादा निभाकर हमें ऐसे अप्रिय कार्य भी करने ही पड़ते हैं । तब राजकुमारी ने उनके चरण पकड़ लिए - हे यमदूत, क्या अकाल मृत्यु से बचने का कोई उपाय नहीं है? तब यम दूत बोले, पुत्री केवल एक उपाय है । कल धन तेरस है, अगर तू न्याय देव यम की निर्जला व्रत रखकर इस दिवस स्तुति करे तो अकाल मृत्यु से छुटकारा पाया जा सकता हैं एवं अकाल मृत्यु का भय भी नहीं सताता।

कहतें हैं राजकुमारी ने निर्जला व्रत रखकर यमदेव को प्रसन्न किया और अपने पति का जीवन दान पाया । तभी से धन तेरस के दिन यमराज के पूजन के पश्चात दीप दान करने की परंपरा भी प्रचलित हुई ।

नारी जीवन के त्याग, प्रेम और बलिदान की भावना से भावुक हो मेरा गला भर आया है । प्रारम्भ एवं मध्य बीसवीं सदी में जन्मी भारतीय नारी अपने पति के प्रति निःसंदेह प्रेम एवं त्याग की साक्षात मूर्ती है। विवाह के उपरान्त उसका समस्त जीवन पति से प्रारम्भ होकर और फिर पति एवं संतान पर ही समाप्त हो जाता है । उसके हृदय में पति के प्रति सम्मान, निष्ठा, श्रद्धा एवं प्रेम तथा अपने संतान के प्रति सब कुछ न्योछावर करने की भावना रहती है. बस एक ही आकांक्षा - पति से प्रेम भाव तथा संतानों से आदर भाव। इसी आकांक्षा से सपने संजोये वह पति के प्रेम भरे शब्दों को सुनने की हर क्षण प्रतीक्षा करती रहती है। काश! हर पति उनकी भावनाओं एवं उनकी आकांक्षाओं के स्वप्न का उचित आदर करने वाला होता?

निःसंदेह अगणित महापुरुषों को इस भूमि ने जन्मा है जिन्होंने नारी के महत्व को केवल दर्शाया ही नहीं वरन जीवन में उद्धृत किया है । श्री राम कृष्ण परमहंस जी भी इसी भूमि पर अवतरित हुए जिनके लिए माँ शारदा एक देवी स्वरूपा थीं । लेकिन अधिकाँश पुरुष मेरी तरह कितनी स्वार्थी उत्पत्ति है ब्रह्मदेव की । जन्म लेने से मरण पर्यन्त तक सभी को, बस केवल और केवल, अपनी ओर ही आकर्षित रखना चाहता है । आकर्षण का केंद्र बिंदु बनकर प्रसन्नता और अभिमान से फूला नहीं समाता । इस स्वार्थी पुरुष ने तो नारी को किसी भी स्वरुप में - माँ, पत्नी, पुत्री इत्यादि, बस अधीनता स्वीकार करने के लिए ही विवस किया । तभी तो महाकवि श्री मैथली शरण गुप्त जी ने कहा है.

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी.
आँचल में है दूध और आँखों में पानी."

यह लघु कथा भी एक ऐसे ही स्वार्थी साधारण पुरुष की है ।

कहने को तो एक उच्च संस्कारी परिवार में जन्मा एवं पला, परन्तु जीवन पर्यन्त सांसारिक प्रवर्तीयों का ही दास बना रहा । बचपन से व्यस्क तथा उसके बाद प्रौढ़ अवस्था तक भी बस एक ही स्वप्न - अपने समकक्षियों से हमेशा दौड़ में आगे रहना । इस दौड़ में अधिकांश समय यह भूला रहा कि भगवान् ने उसे एक देवी-स्वरूपा पत्नी एवं देव-देवी स्वरुप पुत्र-पुत्रियों का पिता भी बनाया है जो उसके एक प्रेम भरे शब्द सुनाने के लिए बैचैन रहते हैं । पुत्र-पुत्रों ने तो उसका नामकरण ही फ़ाइलेरिया रख दिया था ।

फ़ाइलेरिया - एक अज़ब नाम लगा ना आपको। परन्तु सत्य ।

"गुरु देव आज घर पधारने वाले हैं, थोड़ा कार्यालय से शीघ्र आ जाना। कुछ दिनों वह यहीं रहेंगे" । ऑफिस जाते हुए आज पत्नी की श्रद्धा भरी आवाज़ ने मुझे चौंका दिया। "अवश्य, किस समय आ रहें हैं गुरुदेव और कितने दिन ठहरेंगे" । "दोपहर को आ रहें हैं, समय तो उन्होंने नहीं बतलाया और ना यह भी बतलाया कि कितने दिन रूकेंगे। बस कहा - पुत्री कुछ दिन तुम्हारे यहां रुकेंगे। अब आप तो जानते ही हैं कितने व्यस्त हैं गुरुदेव और हमेशा जन-कल्याण में ही लगे रहते हैं, उनका ना कोई ठिकाना है और ना कोई समय का अनुमान। " "हाँ जानता हूँ। तुम गुरुदेव के स्वागत की तैयारी करो और उनकी हर सुख-सुविधा का ध्यान रखो, मैं अवश्य ही आज शीघ्र आने का प्रयास करूंगा। " कहकर मैं कार्यालय चला गया।

गुरुदेव आज दोपहर को खाने के समय से कुछ पहले ही घर पहुँच गए थे। बच्चों की गर्मी की छुट्टियां चल रहीं थीं अतः सब बच्चे भी घर में ही थे। गुरुदेव - बच्चो के साथ तो बिलकुल स्वयं भी बच्चे ही बन जाते थे। गुरुदेव का नाम सुनकर और उनका आना सुनकर बच्चों के चेहरे पर कभी ना देखनी वाली मुस्कान नज़र आने लगती थी । कभी कभी तो मुझे भी गुरुदेव से ईर्षा होने लगती थी कि ऐसी क्या बात है गुरुदेव में जो बच्चों को इतना आकर्षित करती है?

भोजन ग्रहण करने के बाद गुरुदेव बच्चों के साथ घुल मिल गए। गुरुदेव बच्चों के साथ कभी सांप सीढ़ी खेलते तो कभी कैरम । कभी उनको

कहानीयाँ सुनाते तो कभी भजन। घर में हंसी और खिलखिलाहट का एक वातावरण हो गया। आज मुझे फिर देर हो जाएगी. मीटिंग्स समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रहीं थीं। मैंने पत्नी को फ़ोन किया और अपनी शीघ्र ना आने की विवशता बतायी। पत्नी को निर्देश दिया - गुरुदेव का पूरा ध्यान रखना। उन्हें किसी भी तरह का कष्ट ना हो। और बच्चों को उनसे दूर रखना. बहुत तंग करते हैं गुरुदेव को। पत्नी ने फ़ोन के स्वर दूसरे कमरे की ओर कर दिए। सुना - गुरुदेव की आवाज़ और बच्चों का खिलखिलाकर हंसना। थोड़े समय के लिए बच्चों की यह प्रसन्नता बहुत अच्छी लगी। आज फिर कुछ अधिक ही विलम्ब हो गया घर पहुंचने में। घर प्रवेश से पहले ही कार के इंजन की गडग़ड़ाहट के बाद भी दूर सड़क तक बच्चों की खिलखिलाहट सुनायी दे रही थी। जैसे ही कार का प्रवेश घर के अंदर हुआ, अचानक खिलखिलाहट बंद हो गयी और स्तब्धता छा गयी। एक आवाज़ सुनी - फ़ाइलेरिया आ गया।

घर में प्रवेश किया। गुरुदेव को सामने देखकर चरण स्पर्श किये। देरी से आने के लिए क्षमा माँगी। लेकिन मुझे लगा गुरुदेव इन क्षमा याचनाओं से दूर कुछ ख्याल में खोये हैं। शीघ्र मेरे सर पर हाथ रख आशीर्वाद दिया। "परम पिता परमेश्वर तुम्हें दीर्घायु एवं सफलता प्रदान करें।"

अचानक से बच्चों के इस तरह से भाग जाने से और स्तब्धता से मुझे लगा गुरुदेव थोड़े से चिंतित हैं, लेकिन उन्होंने कुछ ऐसा दर्शाया नहीं।

रात को भोजन कर में अपने शयनकक्ष में शयन के लिए चला गया। बहुत थका हुआ था, थोड़ी थोड़ी नींद आने लगी। लेकिंन इतनी देर में कुछ फुसफुसाने की आवाज़ सुनायी दी। सुनने का प्रयास किया। यह तो बंटी की आवाज़ है, और गुरुदेव से कुछ बात कर रहा है। क्रोध आया। इन नालायक औलाद को रात में भी चैन नहीं है। गुरुदेव को रात में भी चैन से नहीं सोने देते। आधी नींद में उठा। अभी एक झापड़ लगायूंगा और आदेश दूंगा अपने कमरे में जाने का। दरवाज़े के पास जैसे ही पंहुचा, सुना गुरुदेव की आवाज़। बेटा - यह फ़ाइलेरिया क्या है? तुम किसको फ़ाइलेरिया कह रहे थे और एक दम पिता की कार की आवाज़ सुनकर तुम भाग क्यों गए?

तुमने पिता का अभिवादन नहीं किया? यह तो कोई अच्छे संस्कार नहीं हैं। देखो ना मैं तुम्हें हमेशा कहता हूँ कि माता पिता ही तो भगवान् होते हैं। फिर तुमने भगवान् का अनादर क्यों किया?

देखा - बंटी गुरुदेव की गोद में चला गया। सुबक सुबक कर रोने लगा। नाना, पिता के पास हमारे लिए समय ही नहीं है। वह गुरुदेव को नाना ही कहता था। जब वह ऑफिस से आते हैं तो ढेर सारी फाइलें लेकर आते हैं, और आते ही हमें डाटना प्रारम्भ कर देतें हैं। "तुम लोग अभी भी यहीं बैठो हो, जाओ पढ़ो। दिन भर टीवी देखते रहते हो। एक माँ है जो कुछ कहती ही नहीं है। बिगाड़ कर रख रखा है। होमवर्क करो। और अगर होमवर्क पूरा हो गया है तो जाओ और सो जाओ। बस खाना के बाद फिर अपनी फाइलों में ही लग जाते हैं। इसी लिए हमने इनका नाम ही फ़ाइलेरिया रख दिया है। हमें उनसे डर लगता है नाना। इसी लिए हम उनके कार की आवाज़ सुनते ही भाग गए और पढ़ने का अभिनय करने लगे।"

मैं यह सब सुन स्तब्ध। काटो तो खून नहीं। यह मैंने क्या किया? अपने बच्चों से इतना दूर? मन किया बंटी को हृदय से लगा लूँ और गुरुदेव के चरण पकड़ूँ मेरी आँखे खोलने के लिए। लेकिन हिम्मत नहीं हुई। चुपचाप बिस्तर पर वापस आ गया और सोने का प्रयास करने लगा।

निद्रा देवी आने का नाम ही नहीं ले रहीं। पुरानी बातें याद आने लगीं.

यह अवश्य ही सत्य है कि जीवन एक संघर्ष है। लेकिन इस तरह की दौड़ तो संघर्ष को कुछ अधिक ही आमंत्रित करती है। आकांक्षों की पूर्ती के प्रयास में उत्सुकता एवं व्याकुलता बढ़ती है। यह तो प्रकृति का नियम हैं कि हर आकांक्षा तो पूर्ण होती नहीं। अपूर्ण आकांक्षाएं निराशा की ओर ले जाती हैं। निराशा से कुंठा एवं कुंठा से क्रोध उत्पन्न होता है। और क्रोध जीवन को अस्त व्यस्त कर देता है।

ऐसी ही एक और घटना मेरी आँखों के सामने नाचने लगी। छीः, कितना स्वार्थी पुरुष हूँ मैं? संभवतः नर्क में भी मुझे स्थान न मिले।

याद आने लगा कुछ समय पुराना समय जब कार्यालय से एक निराशा के साथ मैं घर वापस लौटा था। एक आकांक्षा की पूर्ती न होने से मेरे अहम् को बड़ी ठेस लगी थी। एक साधारण परन्तु स्वाभिमानी पुरुष के अहम् की ठेस उसे कुंठित कर देती है। कुंठित अवस्था में उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता, यहां तक कि खाने पीने में रूचि, मनोरंजन के साधन, मित्र एवं स्वपरिवारजनों का साथ भी नहीं भाता। ऐसा ही तो मेरे साथ इस धन तेरस के दिन हुआ था।

अपने से कुंठित, निराश एवं क्रोधित इस धन तेरस को जब में ऑफिस से घर लौटा तो मेरी पत्नी मेरी प्रतीक्षा कर रही थी ताकि मेरे आने पर इस शुभ दिन की रस्में पूरी की जा सकें।

धन तेरस दिवस की प्रथा रखते हुए आज तो कुछ बर्तन अथवा स्वर्ण खरीदना आवश्यक है, इस विचार से वह मेरे ऑफिस से आने पर मुझे बाज़ार चलने के लिए प्रोत्साहित करने लगी। लेकिन मैं - बस अपनी ही कुंठा में विचलित हो रहा था। पत्नी की हठ ने मुझे उत्तेजना में डाल दिया और बस प्रारम्भ हुआ आरोप - प्रत्यारोप। घर का शांत वातावरण एक कुंठित वातावरण में परिवर्तित हो गया।

अनायास उस दिन भी तो गुरुदेव आ गए थे। कुंठित वातावरण देख बहुत दुखी हुए थे। "पुत्र - तुम्हारी आकांक्षाओं की पूर्ती न होने का कारण तुम्हारी देवी-स्वरूपा पत्नी तो नहीं है न? क्या तुमने कभी सोचा है कि कितना प्रेम है उसके हृदय में तुम्हारे लिए? कितना ध्यान रखती है वह तुम्हारा? तुम्हारी एक थोड़ी सी अस्वस्थता से उसकी नींद उड़ जाती है। तुम्हारी एक इक्षा की पूर्ती के लिए सब कुछ न्योछावर करने के लिए हमेशा तत्पर रहती है। और एक तुम हो। एहसान मानना तो अलग, उससे दो शब्द प्रेम के भी नहीं बोल सकते। "

गुरुदेव के शब्दों का तथ्य समझ कितना अपराध बोध हुआ था मुझे। सच ही तो कहा है गुरुदेव ने? मेरा जीवन ही क्या है अगर मेरी पत्नी मेरे जीवन में नहीं?

उस दिन गुरुदेव के चरण पकड़ मैंने क्षमा माँगी थी। गुरुदेव तो उसी समय चले गए थे। लेकिन उस रात का स्वप्न? वह तो मैं कभी भूल नहीं सकता।

अपराध बोध से ग्रस्त मैं किसी तरह उस दिन सोने का प्रयास कर रहा था लेकिन जैसे निद्रा देवी तो आना ही नहीं चाहतीं थीं। मष्तिष्क पता नहीं कहाँ भ्रमण कर रहा था। गुरुदेव के कहे एक एक शब्द मुझे याद आने लगे। यह मैंने क्या किया? सत्य ही तो है कि मेरी आकांक्षाओं की पूर्ती न होने का कारण मेरी देवी-स्वरूपा पत्नी तो है नहीं। किसी तरह आँखे लगने लगी थीं। यह क्या? मैंने अपने आपको एक निर्जन स्थान पर अकेला उदास एक वृक्ष के नीचे बैठा हुआ पाया। निराशा से डूबे हुए नकारात्मक विचारों में खोये हुए इस दुनिया से अनजान संभवतः कहीं दूर जहाँ कोई जानने वाला न हो, ऐसे स्थान पर जाने की गहन चिंता में डूबा हुआ था। तभी एक श्वेत वस्त्र में प्यारी सी बच्ची की मधुर आवाज़ सुनायी दी।

"क्या हुआ बाबा? इतने चुप क्यों हो?"

"कुछ भी तो नहीं बेटा, बस ऐसे ही।" मैंने उसे अनदेखा कर उत्तर दिया।

"तुम्हें भी भूख लगी हैं ना बाबा, मुझे तो बहुत भूख लगी है। चलो ना वहां सामने एक आश्रम दिखाई दे रहा है। अवश्य ही वहां कुछ खाने को मिल जाएगा।" फिर से वही मधुर आवाज़ सुनायी दी।

इस आवाज़ ने मुझे मन्त्र मुग्ध कर दिया। बस चुम्बक की तरह खिंचता चला गया मैं उस आश्रम की ओर, अपनी इस छोटी सी, सुन्दर सी मधुर धर्म पुत्री के साथ।

यह क्या? यह तो गुरुदेव का आश्रम है।

"बहुत प्रतीक्षा कराई पुत्र, मैं तो कब से तुम्हारी प्रतीक्षा में ही यहाँ बैठा हूँ।" गुरुदेव की भारी भरकम आवाज़ सुनायी दी आश्रम के मध्य आँगन से।

"चरण स्पर्श गुरुदेव। मुझे और मेरी पुत्री को बहुत भूख लगी है, कुछ खाने को मिलेगा?" मैंने गुरुदेव के चरणों में बैठकर पूछा।

"अवश्य. यह फल अभी प्रसाद स्वरुप ग्रहण करो, बाद में पूर्ण भोजन करना ।" गुरुदेव बोले. मैं और मेरी धर्म पुत्री प्रसाद ग्रहण करने लगे हैं।

"वत्स, यह उत्सुकता और व्याकुलता क्यों? ये उत्तेजित होना, वाद-अपवाद करना क्यों? इस तरह उत्तेजना में शब्द अपशब्द बोलते रहोगे तो मैं तुम्हारी मदद कैसे कर पाऊँगा? मैं तो तुम्हें रत्न जड़ित स्वर्ण चादर देने बैठा हूँ, फिर चीथड़ों के लिए इतनी व्याकुलता क्यों? पत्नी तो गृहलक्ष्मी होती हैं ना? क्या पुत्र तुम कभी माँ लक्ष्मी पर कोई उत्तेजना दिखाने का दुःसाहस कर सकते हो? अगर माँ लक्ष्मी पर नहीं, तो फिर गृहलक्ष्मी पर क्यों?" गुरुदेव धीमी परन्तु साधिकार आवाज़ में बोले।

गुरुदेव की वाणी ने मेरा अपराध बोध और भी बढ़ा दिया। मैं गुरुदेव के चरण पकड़ उनसे क्षमा की भीख माँगने लगता हूँ। मेरा कवि हृदय उनकी वन्दना में गीत स्वरुप में फूट पड़ता है।

मोहे आज बचालो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन।
ना सूझे कोई मार्ग प्रभु, भटकाय रही यह आवानलन॥
मोहे आज बचा लो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन...

संसार घना जंगल है गुरु, अंधकार छुपाए पाथागन।
चहु ओर दिखें हैं वेग पशु, ना ठोर दिखे है बाचावन्॥
मोहे आज बचा लो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन...

दरश दीन्ह दिव्यदेव गुरु, अनुमोदन श्री विवेकानंदन।
तुलसी नयन सफल हनू, जो दरश दिए रघुवर आनंदन॥
मोहे आज बचा लो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन...

ग्यान ध्यान ना समझ सकूँ, कोसों दूर हैं भक्तावन।
पायूँ कैसे मैं सत्संग प्रभू, भक्ति ना मेरे समझावन॥
मोहे आज बचा लो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन...

मूढ़मती ना ध्यान लगा प्रभू, लक्ष्य एक बस स्वार्थापन।
दूर करो अग्यान मेरे गुरु, आया है सिडी तेरे द्वारापन॥
मोहे आज बचा लो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन...

आज मैं फिर बिस्तर पर पड़े पड़े उन्हीं गुरुदेव के शब्दों का विश्लेषण करने लगता हूँ। कितना सत्य है गुरुदेव के एक एक शब्द में. यह सत्य ही तो है कि आकांक्षाएं उत्सुकता और व्याकुलता बढ़ाती हैं। असफल आकांक्षाओं से कुंठा और उत्तेजना, और फिर सर्वनाश. फिर आकांक्षाएं क्यों? जब गुरुदेव रत्नजड़ित स्वर्ण चादर देने को तैयार बैठे हैं तो फिर चीथड़ों के लिए इतना संघर्ष क्यों? और मेरी धर्म पुत्री...? अवश्य ही मेरे किसी जन्म के संस्कारों का फल होगी तभी तो मेरी मार्ग प्रदर्शक बनी। हे मेरी धर्म पुत्री तुझे शत शत प्रणाम।

सुबह जागने पर पत्नी को यथावत अपनी दिनचर्या में व्यस्त पाया। गुरुदेव पूजा गृह में थे। तुरंत हाथ मुँह धोकर गुरुदेव के चरणों में लिपट गया। "मोहे आज बचालो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन"।

अजी सुनते हो, ज़रा इधर आओगे. तभी मुझे अपनी पत्नी का मधुर शब्द सुनायी दिया।

"एक खुशखबरी. आप पिता बनने वाले हैं।"

गुरुदेव, मेरी धर्म पुत्री..... मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा।